जनपहल सूक्ष्म नियोजन

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

कार्यक्रम

सामुदायिक सहभागिता

दिनांक 07.11.2019
से 12.11.2019 तक

विकासखण्ड बेरला

जिला बेमेतरा

छत्तीसगढ़

जनपहल

संरक्षक

श्रीमती शिखा राजपुत तिवारी — जिलाधीश बेमेतरा

श्री सी. एस. ध्रुव — जिला शिक्षा अधिकारी बेमेतरा

मार्गदर्शक

श्रीमती जे. एक्का प्राचार्य

श्री पी.सी.राव सावरकर

श्री यू. के. चकवर्ती

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. डी. के. बोदले, श्री सुनील मिश्रा

श्रीमती लता मिश्रा

श्रीमती वाय. महाड़िक

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर

निरीक्षण दल के सदस्य

1. श्री शेष शुभ वैष्णव
2. श्री मनीष मिश्रा
3. श्री जागेश्वर साहू
4. श्री संजय एक्का
5. श्री सुमीत पाण्डे
6. श्रीमती अतुला बासु
7. श्रीमती प्राची तिवारी
8. शगुफ्ता सुल्ताना
9. श्री केदारनाथ पटेल
10. श्री अश्वनी चंन्द्रा
11. श्री मोहन पटेल
12. श्री रेवा राम साहू
13. श्रीमती उषा साव

शुभकामना संदेश

श्रीमती जे. एक्का, प्राचार्य

शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

प्रिय ,

छात्राध्यापकों बी.एड. 1st sem

शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर।

जनपहल सूक्ष्म नियोजन सामुदायिक सहभागिता का उद्देश्य शिक्षा के प्रति समाज को जोड़ना,जागरूक करना एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करना है। जनपहल सूक्ष्म नियोजन कार्यक्रम में आपको प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक व सामाजिक समस्याओं एवं उपलब्धियों के बारे जानने और अनुभव करने का अवसर प्राप्त होगा। ऐसी महत्वपूर्ण शिविर म आपको बहुत सारे अनुभव प्राप्त होंगे जिससे आप अपने अनुभवों का साझा कर कई अवधारणाओं को समझ सकेंगे।

आपके इस कार्यक्रम की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवतु सब मंगलम्

समुदाय शिक्षा संस्थान के रूप में

श्री यू. के. चकवर्ती, मार्गदर्शक जनपहल

शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

प्रत्येक समुदाय की अनेक समस्याएं तथा आवश्यकताएं होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समाधान से समुदाय का रहन–सहन सुधरता है तथा प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर होता है। जो समुदाय उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाता वह अपने सीमित क्षेत्र में अपनी सीमित आवश्यकताओं और ढंगों वाली संस्कृति से ही लिपटा रहता है। इससे उसकी निर्धनता ज्यों की त्यों बनी रहती है। अतः प्रत्येक समुदाय अपनी प्रगति के लिए नई पीढ़ी के लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करता है।

यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक समुदाय ने अपनी पगति के लिए राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा सदैव अपने आदर्शों और उद्देश्यों के अनुसार मोड़ने का प्रयास किया है। इसलिए स्कूल को समाज का लघु रूप की संज्ञा दी जाती है। ध्यान देने की बात यह है कि समुदाय शिक्षा संस्था के रूप मं बच्चों को औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों रूप से शिक्षित करता है। इसलिए हमें विभिन्न जन जागरूकता अभियानों के द्वारा समाज को जागरूक करनें की जरूरत है, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सकें और हम अपने शैक्षिक लक्ष्य को पाने में सफल हो सके।

बच्चों की शिक्षा में समुदाय का महत्व

श्री पी.सी.राव सावरकर,मार्गदर्शक जनपहल

शासकीय शिक्षा शिक्षक महाविद्यालय रायपुर

समुदाय बच्चों की शिक्षा का महत्वपूर्ण सकिय तथा औपचारिक साधन है। जिस प्रकार बालक की शिक्षा पर परिवार का गहरा प्रभाव पड़ता ह, उसी प्रकार समुदाय भी बालक के व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि वह उस समूह के कार्यों में सकिय रूप से भाग लेने योग्य बन जाता है जिसका वह सदस्य है। इसलिए यह कहावत अब भी चली आ रही है कि प्रत्येक बालक वैसा ही बन जाता है जैसे की समुदाय के बड़े लोग उसे बनाना चाहते हैं। वास्तविक यह है कि बालक जन्म से लेकर केवल पारिवारिक वातावरण में ही विकसित नहीं होता अपितु उसके विकास में समुदाय के विस्तृत वातावरण का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

समुदाय के वातावरण का ही तो प्रभाव है जिसमें रहते हुए बालक को प्रवृत्ति ,विचारधारा तथा आदतों का निर्माण होता है एवं उसकी संस्कृति ,रहन–सहन तथा भाषा पर एक अमिट छाप दिखाई पड़ती है। ध्यान देने योग्य बात है कि समुदाय का वातावरण बच्चे की अनुकरण करने की जन्मजात प्रवृत्ति को विशेष रूप से प्रभावित करता है। बच्चा उन लोगों का अनुकरण करने लगता है जिसके संपर्क मे आता है। इसलिए समुदाय द्वारा बच्चों को ऐसी कार्य या शिक्षा नहीं देनी चाहिए जिससे कि बच्चे में नकारात्मक कियाओं का संचार हो। सामुदायिक सहभागिता कार्यकम के माध्यम से लोगों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जा सकता है,जिससे बच्चों का सतत विकास हो सके।

सामुदायिक सहभागिता

डॉ. डी.के. बोदले

सहायक समन्वयक जनपहल, CTE रायपुर

सामुदायिक सहभागिता विद्यालय और समाज के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है ,जब ज्ञान मूल्यों और सिद्धांतों का प्रकाश विद्यालय की चार दीवारी से बाहर समुदाय तक पहुँचता है, तब समाज के वास्तविक महत्व,प्रगति और खुशहाली को समझे और स्वीकार करने में सक्षम बनता है। जागरूक समुदाय दायित्व पूरा करता है कि उसक बच्चे पढ़े–बढ़े और सशक्त नागरिक बनें। कक्षा में शिक्षक अपने स्तर पर कितना ही प्रयास क्यों ही न कर ले, लेकिन जब तक समुदाय साथ नहीं देता तब तक विद्यालय में कम नामांकन, कम उपस्थिति, कम ठहराव और शैक्षिक गुणवत्ता में गिरावट जैसी प्रमुख समस्याओं का समाधान संभव नहीं है।

अक्सर यह देखा गया है कि कम शिक्षित या अशिक्षित अभिभावकों के मन में शिक्षा और विद्यालय के प्रति उदासिनता है। उसके मन में अपने बच्चे को विद्यालय भेजने को लेकर कोई रूझान नहीं होता, लेकिन सामुदायिक सहभागिता नवाचार के माध्यम से इस दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। समाज और विद्यालय के बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत करने में सामुदायिक सहभागिता नवाचार का विशेष स्थान है।

शैक्षिक प्रशासन और प्रबंधन में समुदाय की सहभागिता

श्री सुनील मिश्रा

समन्वयक जनपहल, CTE रायपुर

विभिन्न अध्ययनों से यह तथ्य निकलकर सामने आया है कि समुदाय की भरपूर सहायता और सहयोग मिलने पर ही प्रधान–शिक्षक द्वारा समुदाय को स्वीकार्य अच्छा नेतृत्व प्रदान किया जा सकता है। विभाग के नियम और प्रतिकियाएं स्कूल के प्रशासन संबंधी निर्णय लेने में अक्सर शिक्षकों के आड़े आते हैं। स्कूल के संचालन की प्रकियाओं में समुदायों को सकिय रूप से शामिल करके शिक्षकों को पीछे से सहारा प्रदान किया जा सकता है।

स्थानीय समुदाय यदि आग बढ़कर स्कूलों के लिए आवश्यक अतिरिक्त संसाधन जुटाने का सकिय प्रयास करते हैं तो वे अपने बच्चों की पढ़ाई की निगरानी करने ,मध्यान्ह भोजन कार्यकम चलाने, स्कूल के मूलभूत ढॉचे का संरक्षण करने, और स्कूल के विकास के लिए वित्तीय राशियां जुटाने में मदद करने का कार्य कर रहे होते हैं। जब युवा और सामुदायिक संगठन भी स्कूलों में बेहतर गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों के साथ हो जाते हैं इससे सीखन–सिखाने को बढ़ावा मिलता है और हमारे बच्चों का सतत विकास होता जाता है।

सामुदायिक सहभागिता द्वारा किया जा सकने वाला प्रयास

श्रीमती लता मिश्रा, सहायक समन्वयक

शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

ग्रामीण परिवेश में सबसे अधिक समस्या छात्रों को विद्यालय तक ले जाने की है। विभिन्न अभियान चला कर यदि छात्रों को विद्यालय में नामांकन करा भी दिया जाता है, तब भी विद्यालयों में छात्रों के अनुपस्थित रहने की समस्या बनी रहती है, इसके अतिरिक्त आमतौर पर अशिक्षित या कम पढ़े–लिखे माता–पिता विद्यालय तक आने में संकोच करते हैं। इस समस्या को सामुदायिक सहभागिता और सामुदायिक जागरूकता के जरिये सुलझाया जा सकता है।

इसके लिए विद्यालय में समय–समय पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, पालकों का सम्मान, सामाजिक उत्थान के लिए सरकारी कार्यक्रमों की जानकारी देने जैसे कार्यक्रम किए जाए तो स्थानीय लोगों और विद्यालय के बीच एक रिश्ता कायम होता है, जिससे बहुत सी समस्याएं दूर हो जाती हैं और परस्पर लाभ मिलता है। समुदाय का विद्यालय के साथ जुड़ने से विद्यालय प्रशासन एवं प्रबंधन सुचारू रूप से संचालित होता है और बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

बेटी पढ़ाओ ,बेटी बचाओ

तुम्हारा प्यार और विश्वास चाहती है बेटियां, चहक चहक चिड़िया सी उड़ना चाहती है बेटियां।

माता पिता का मान होती हैं बेटियां, फिर कोख में क्यों मारी जाती हैं बेटियां।।

कोठारी आयोग के अनुसार स्त्री शिक्षा पर प्रमुख सुझाव

श्रीमती वाय. महाड़िक, सहायक समन्वयक

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

1964 में डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग, जिसने अपना प्रतिवेदन 1966 में दिया था, ने भी महिला शिक्षा की समस्या पर विचार किया तथा अपने सुझाव प्रस्तुत किए। कोठारी आयोग ने मानव संसाधनों के विकास, परिवारों की उन्नति तथा बच्चों के चरित्र निर्माण में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण स्वीकार किया तथा महिला शिक्षा के लगभग सभी पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए जिनमें से कुछ सुझाव अग्रांकित हैं–

1. भारतीय संविधान में संकल्पित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लड़कियों की अनिवार्य शिक्षा के लिए अधिकाधिक प्रयास किए जाएँ।
2. लड़कियों को अध्ययन के लिए लड़कों के विद्यालय में भेजने के लिए जनमत तैयार किया जाए।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर लड़कियों के लिए अलग विद्यालय खोले जाएँ।
4. लड़कियों के लिए निःशुल्क छात्रावासों तथा छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की जाए।
5. लड़कियों के लिए अल्पकालीन शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
6. लड़कियों की उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए।
7. लड़कियों के लिए पृथक कॉलेज स्थापित किया जाए।
8. शिक्षाशास्त्र ,गृहविज्ञान तथा सामाजिक कार्यकमों के पाठ्यकम को समुन्नत करके लड़कियों के लिए अधिक उपयोगी बनाया जाए।
9. नारी शिक्षा के लिए अनुसंधान केन्द्र बनाया जाए।
10. स्त्री शिक्षा के संचालन के लिए केन्द्र तथा राज्य स्तर पर प्रशासनिक तंत्र का गठन किया जाए।

बड़ा सामाजिक दायित्व है अध्यापन

रेवा राम साहू, एम.एड 1st sem

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर

खुलेमन से सीखने की तत्परता और अपनी शिक्षण विधियों मे लचीलापन रखने की कोशिशों से शिक्षक,शिक्षण की प्रकिया को रचनात्मक और आनंददायी बना सकेंगे। तभी बच्चों की इसमें रूचि तथा दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा एवं शिक्षण स जुड़े लोगों को गंभीरता से अपने शिक्षण पद्धति पर आत्मचिंतन और मूल्यांकन करना होगा, जिससे बच्चे में विकसित किए जाने कौंशलों पर काम किया जा सके। चिंतनशील शिक्षण प्रकिया में लगातार स्वयं का मूल्यांकन और विकास के लिए उत्सुकता और इच्छा प्रदर्शित की जाती है।

वहीं हमें परंपरागत शिक्षण के तौर तरीकों से बाहर निकलकर नए तरीके अजमाने का जोखिम लेना होगा। जरूरी यह है कि शिक्षा से सरोकार रखने वालों को अपने अध्यापन कर्म को बड़े सामाजिक दायित्व के रूप में देखना होगा क्योंकि बच्चों को पढ़ाना अपरिहार्य काम है। यह स्वयं की खुशी या जरूरत के लिए किया जाने वाला कार्य नहीं है। यह दायित्व तब और महत्वपूर्ण हो जाता है जब हमारे सरकारी स्कूलों में बहुत सारे बच्चे वंचित वर्ग से आते हैं। हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मदारी बनती है कि हम बच्चों को पूरी तैयारी और संवेदना से सीखएं–पढ़ाएं और साथ ही समाज पहले अपने जीने के उद्देश्य को तय करे और फिर एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना करे जो हमें अपने उद्देश्यों तक पहुंचने में मदद कर सके।

एक अच्छे विद्यालय को लेकर हमारा क्या सपना है?

स्वयं को पहचानना व्यक्तिगत कौशलों के संदर्भ में जो किसी को एक व्यक्ति के रूप में प्रभावशाली बनाते हैं। सामूहिकता की भावना जागृत करना कि मैं नहीं "हम" महत्वपूर्ण है जो सामूहिक नेतृत्व का आधार है।

सर्वे क्षेत्र विकासखण्ड बेरला का मानचित्रीकरण

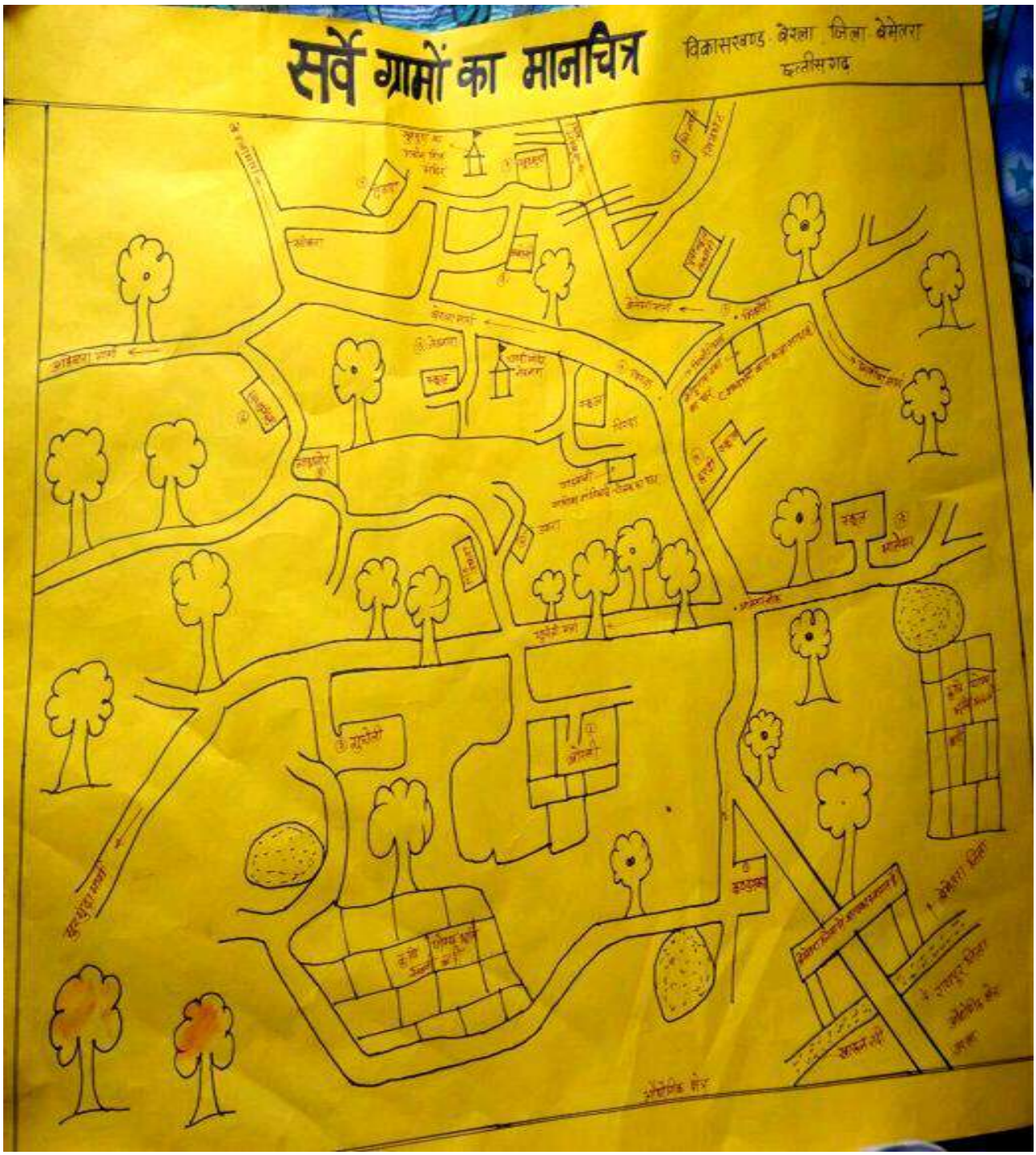

जनपहल

जनपहल सूक्ष्म नियोजन कार्यक्रम में प्रस्थान के लिए श्रीमती जे. एक्का प्राचार्य शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर ने अपने आशीष वचन के साथ हरी झण्डी दिखा कर रवाना किए । साथ ही साथ डी पी आई के अधिकारी गण, श्री पी. सी. राव सावरकर,श्री यू.के.चकवर्ती,श्री हुसैन सर, श्रीमती सैफाली मिश्रा, श्री बोदले सर,श्री सुनील मिश्रा ,श्रीमती लता मिश्रा ,श्रीमती वाय. महाड़िक एवं शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर के सभी फैकल्टी स्टाप ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपने आशीष वचन प्रदान किए।

जनपहल

सर्वे क्षेत्र का सामान्य परिचय :–

सर्वे ग्राम का नाम – कण्डरका, बोरसी गुधेली उफरा,गाड़ामोर ,गोंड़गिरी,देवादा,अकोली ,भालेसर खुड़मुड़ा,सिलघट,भिंभौरी, पिरदा, हरदी, नेवनारा

विकासखण्ड –बेरला

जिला – बेमेतरा छत्तीसगढ़

भौगोलिक स्थिति– बेमेतरा जिला क दक्षिण पूर्व में स्थित
उत्तर में बेमेतरा विकासखण्ड
दक्षिण में धमधा विकासखण्ड
पूर्व में सिमगा व धरसिंवा विकासखण्ड
पश्चिम में साजा विकासखण्ड
बेमेतरा जिला में शिवनाथ नदी क
दक्षिण भाग में स्थित है।

जलवायु – शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र

मिट्टी – काली मिट्टी

ऐतिहासिक चित्रण :–

1. इस क्षेत्र का ऐतिहासिक चित्रण यह है कि ग्राम नेवनारा में शक्ति स्वरूपा माता चण्डी का मंदिर स्थित है। मंदिर के पुजारी द्वारा बताया गया कि नेवनारा के मंदिर का वर्णन शिवपुराण में है। मंदिर में 73 वर्षो से अखण्ड ज्योति प्रज्वलित हो रही है। मंदिर के बीचों बीच नीम और पीपल का जोड़ा है जिसमें श्रद्धालुगण मनोकामना फल बांधते है।

2. खुड़मुड़ा का शिव मंदिर –

ग्राम खुड़मुड़ा में सन 1659 में निर्मित भगवान शिव जी का मंदिर है जिसे वहॉ के जमीदार द्वारा बनाया गया है। इस मंदिर को छःमासी मंदिर के नाम से जाना जाता है।इस मंदिर का निर्माण छःमाह में दिन–रात में हुआ है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस मंदिर में शिवलिंग है वह स्वयंभू है जो जमीन से निकला है। इस मंदिर निर्माण नागर स्थापत्य शैली में हुआ है। इस मंदिर का दर्शन करने के लिए कॉफी दूर–दूर से श्रद्धालुगण आते हैं।

खुड़मुड़ा का नाम खुड़मुड़ा वहां के गौटिया के गोत्र के कारण पड़ा है। कुर्मी बाहुल्य गांव, खुडमुड़ा गोत्र के गौटिया के बसाने के कारण पड़ा है।

3. भिंभौरी का इतिहास :–

ग्राम भिंभौरी का नाम भिंभौरी इस लिए पड़ा कि सोनाखान के जमीदार परिवार से तालुक रखने वाले भिम्भा के द्वारा इस गांव को बसाने के कारण पड़ा है। उसके वंशज आज भी इस गांव में निवास कर रहे हैं।

सामाजिक परिदृश्य –

यह क्षेत्र कुर्मी और साहू बाहुल्य क्षेत्र है। अधिकांश गांव में कुर्मी और साहू समाज के लोग अधिक निवास करते हैं।

वर्गवार जानकारी नीचे दी गई ह–

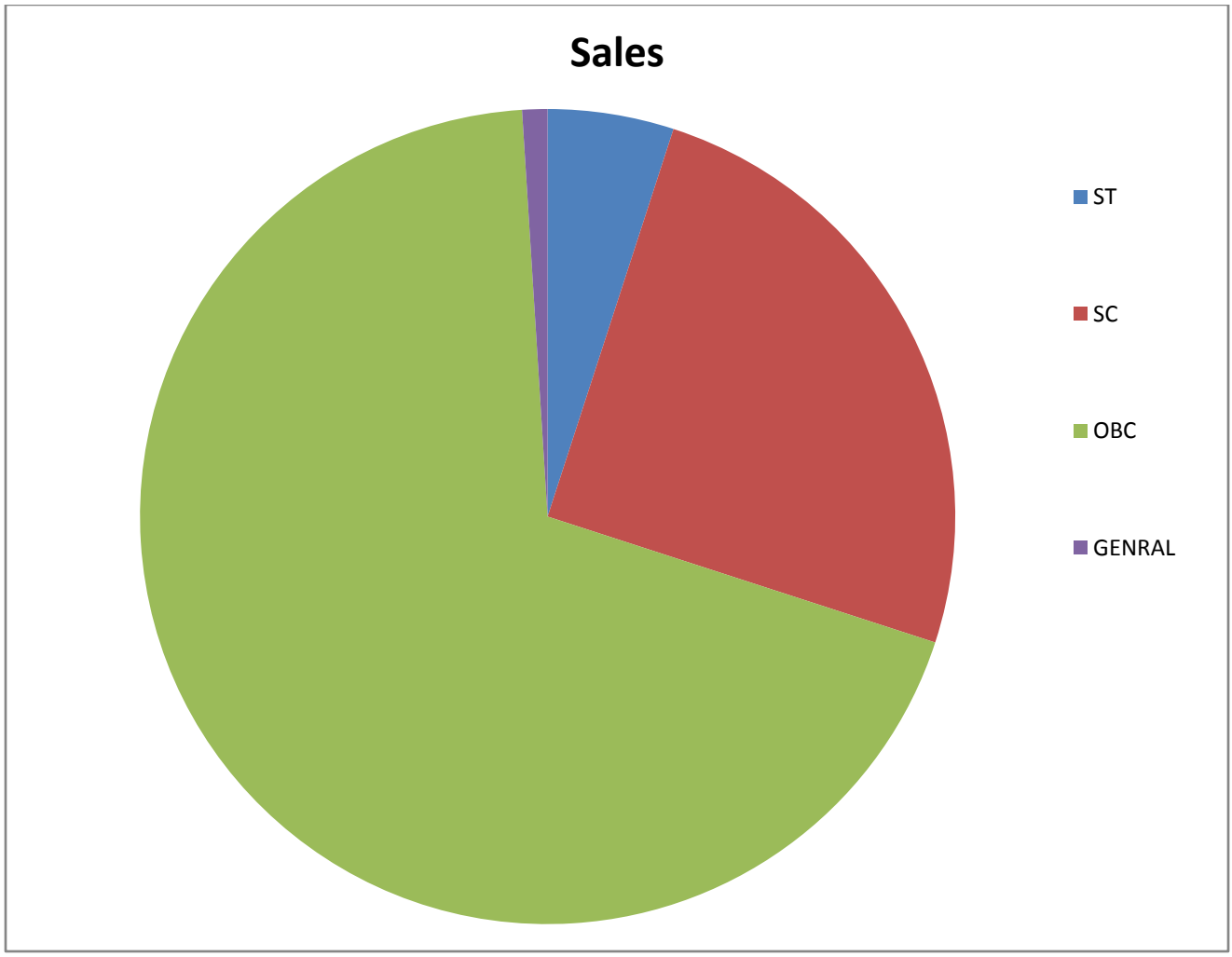

ST–6% , SC–26% , OBC–68% , GENRAL–1%

आर्थिक परिदृश्य :–

इस क्षेत्र की अधिकांश आबादी कृषि पर आश्रित है। मुख्य आय का स्त्रोत कृषि मजदूरी है।

आलेख के माध्यम से हम आर्थिक स्थिति के बारे में जान सकते हैं–

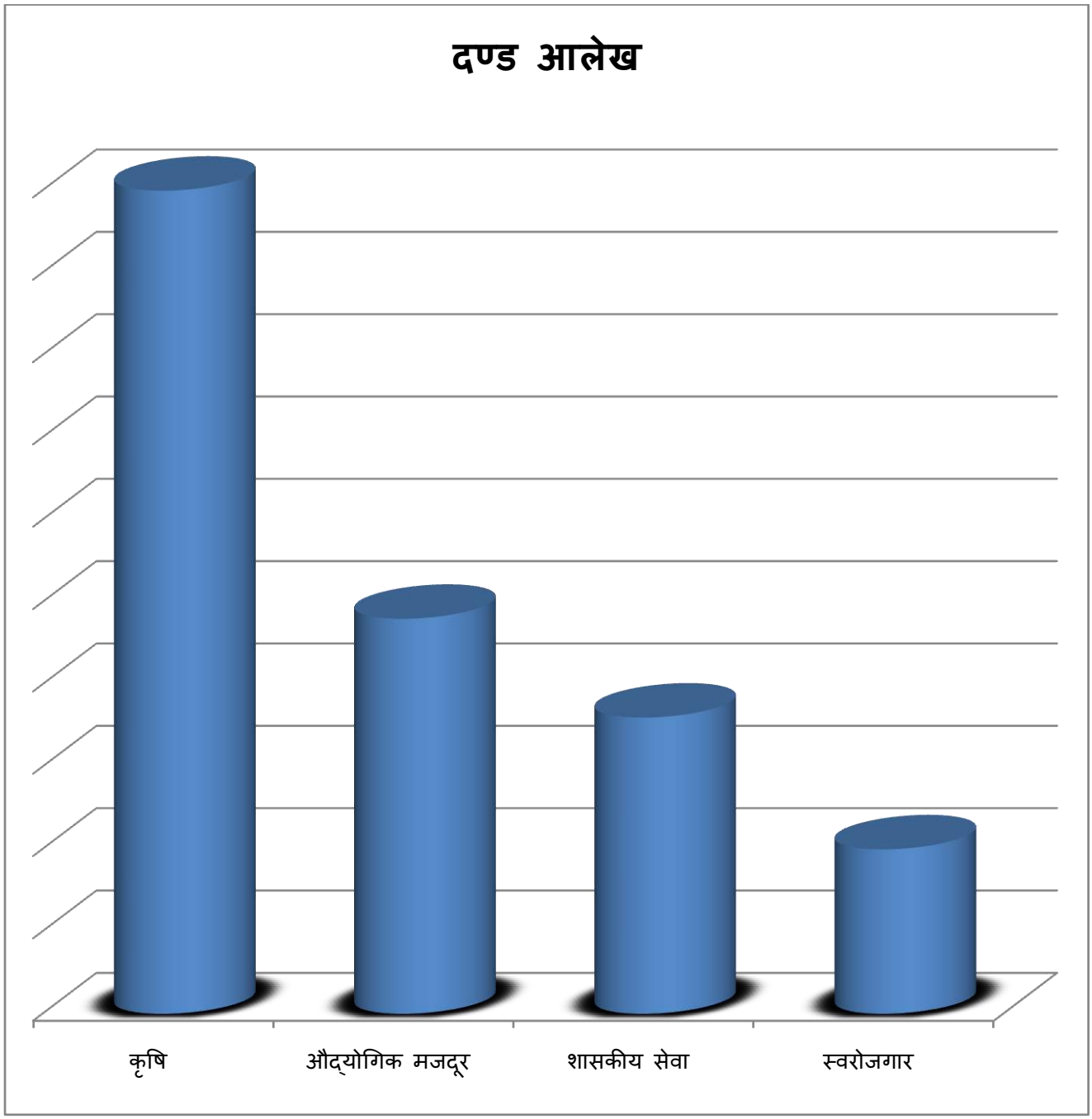

विभिन्न व्यवसाय पर आश्रित जनसंख्या

कृषि–65% औद्योगिक मजदूर–18% शास. सेवा–12% स्वरोजगार–5%

शैक्षिक परिदृश्य :– शैक्षिक स्थिति –A

क्र.	शाला का नाम	नामांकन	ठहराव	गुणवत्ता
1.	2.	3.	4.	5.
1.	प्राथमिक शाला	100%	97%	90%
2	पूर्व माध्य. शाला	100%	95%	78%

शैक्षिक स्थिति –B

क्र.	शाला का नाम	अप्रवेशी	अध्ययन त्यागी	शाला त्यागी
1.	2.	3.	4.	5.
1.	प्राथमिक शाला	NILL	3%	0.1%

2	पूर्व माध्य. शाला	NILL	5%	0%	

क.	शाला का नाम	बच्चे का नाम	पिता का नाम	जन्मतिथि	कक्षा	अध्ययन त्यागी का कारण
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
1.	Ps देवादा					
2.						

1. अध्ययन त्यागी बच्चों की जानकारी

क.	शाला का नाम	बच्चे का नाम	पिता का नाम	जन्मतिथि	कक्षा	अध्ययन त्यागी का कारण
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
-						
-						

2.शाला त्यागी बच्चों की जानकारी

क.	शाला का नाम	बच्चे का नाम	पिता का नाम	जन्मतिथि	कक्षा	शाला त्यागी का कारण
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
.						
.						

3. अप्रवेशी बच्चों की जानकारी

क्र.	शाला का नाम	बच्चे का नाम	पिता का नाम	जन्मतिथि	कक्षा	शाला त्यागी का कारण
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
.						
.						

4. दिव्यांग बच्चों की जानकारी

क्र.	शाला का नाम	बच्चे का नाम	पिता का नाम	जन्मतिथि	कक्षा	शाला त्यागी का कारण
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
.						
.						

शैक्षिक समस्याएंः–

1. कक्षा आठवीं पढ़ने के बाद पढ़ाई छोड़ कर फैक्ट्री व सब्जी–बाड़ी में काम करने चले जाते हैं।
2. माता–पिता के सुबह से ही अपने काम में चले जाने और देर शाम तक आने के कारण बच्चें स्कूल नहीं जाते हैं।

बच्चों के शाला न आने/पालक के न भेजने के कारण–

1. छोट भाई–बहन को संभालना पड़ता है।
2. लड़की घर का काम करती है और खाना बनाती है
3. माता–पिता के पलायन होने के कारण।
4. फेल होने के कारण ।
5. कई बेरोजगार पढ़–लिख कर घूम रहे हैं।
6. पढ़ाई में बच्चे का मन नहीं लगता ।
7. रोज स्कूल जाने के बाद भी कुछ नहीं सीख रहा है।
8. बच्चों के रूचि के अनुसार शिक्षण नहीं होता।
9. शाला में शिक्षक समय पर उपस्थित नहीं होता।
10. विषय वार शिक्षक न होने के कारण।
11. लड़की के साथ भेदभाव के कारण।
12. पढ़ लिख कर क्या करेगा ऐसी रूढ़िवादी सोच के कारण
13. शिक्षक को बार बार गैर शिक्षकीय कार्य में संलग्न करने के कारण।
14. शाला का वातावरण बच्चे के अनुरूप न होने के कारण।
15. शिक्षक और छात्र में मित्रवत व्यवहार व संबंध अच्छे न होने के कारण

विशेष शैक्षिक उपलब्धि वाले बच्चे एवं विद्यालय–

1. शासकीय प्राथमिक शाला गाड़ामोर में प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का स्तर बेहतर है । प्रायः सभी बच्चे अपनी स्तर अनुरूप पाठ्य वस्तु पढ़ पा रहे थे एवं विषयवस्तु के प्रति समझ विकसित है। शिक्षक द्वारा विभिन्न शैक्षिक एप से स्मार्ट क्लास में प्रोजेक्टर द्वारा अध्यापन कराया जाता है ,जो बच्चों के सीखने सीखाने की पकिया में काफी मददगार साबित हो रहा है। कक्षा पहली से ही बच्चे अंग्रेजी के छोटे छाटे शब्दों का उच्चारण करने का प्रयास कर रहे थे। शिक्षकों द्वारा काफी मेहनत किया जाता है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चें आगे बढ़ रहे हैं।

गांव में कुल परिवारों की संख्या	–	197
गांव की कुल जनसंख्या	–	1268
गांव की कुल साक्षरता दर	–	94
गांव में कुल शास. सेवक की संख्या	–	133

2. शासकीय प्राथमिक शाला हरदी में बच्चों का स्तर बेहतर है। यहॉ भी बच्चें स्तर अनुरूप पाठ्यपुस्तक का अध्ययन कर लेते है। शिक्षकों से स्तर के बारे में पूछा गया तो बताए की जो शिक्षक कक्षा पहली में जिस विषय को पढ़ाना शुरू करता है उसी विषय को आगे बढ़ाते हुए कक्षा पॉचवी तक ले जाता है जिससे शिक्षक को यह पता रहता है कि बच्चे का स्तर कैसा है और उसे अगली कक्षा में कहॉ से पढ़ाना है इन सभी तथ्यों , विभिन्न नवाचारी शिक्षण विधियों से अध्यापन कराने से बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार होता है।

3. शासकीय उ. मा. विद्यालय खुड़मुड़ा में कक्षा बारहवीं का रिजल्ट विगत 3 वर्षो से शतप्रतिशत रहा है। जिसका पूरा श्रेय शिक्षकों , पालकों एवं बच्चों को जाता है। सभी के सकारात्मक सोच व कार्य के प्रति लगनशीलता के कारण बच्चे आगे बढ़ रहे हैं और अपने माता–पिता, शिक्षकों और गांव का नाम रोशन कर रहे हैं।

ग्राम खुड़मुड़ा के एक छात्रा ने राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में अपनी जगह बनाई थी।

4. शासकीय प्राथमिक शाला पिरदा एवं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पिरदा के बच्चों का स्तर कक्षा अनुरूप बेहतर है। यहॉ के बच्चों का सांस्कृतिक गतिविधियों में विशेष रूचि दिखाई देता है। सांस्कृतिक कार्यकमों अपना चमक बिखेरते हैं। खेल के क्षेत्र में भी यहॉ के बच्चों का प्रदर्शन उत्कृष्ठ रहता है। खेल के क्षेत्र में भी अपना उत्कृष्ठ प्रदर्शन करते हुए विकासखण्ड एवं जिला स्तर में अपना जगह बना लेते है।

5. शासकीय प्राथमिक शाला एवं पूर्व माध्यमिक शाला भालेसर में बच्चों का खेल के प्रति विशेष रूचि दिखाई दिया यहॉ के बच्चे कबड्डी खेल में विकासखण्ड एवं जिला स्तर में अपना स्थान बनाए है।

6. शासकीय प्राथ. शाला सिलघट में भी बच्चों का स्तर बेहतर है। यहॉ के अधिकतर बच्चे पुलिस बनने की इच्छा रखते है।

मौसमी चित्रण –

मौसमी चित्रण में विभिन्न मौसम में बच्चों की उपस्थिति का चित्रण किया जाता है, जिससे बच्चों की उपस्थिति का पता चलता है।

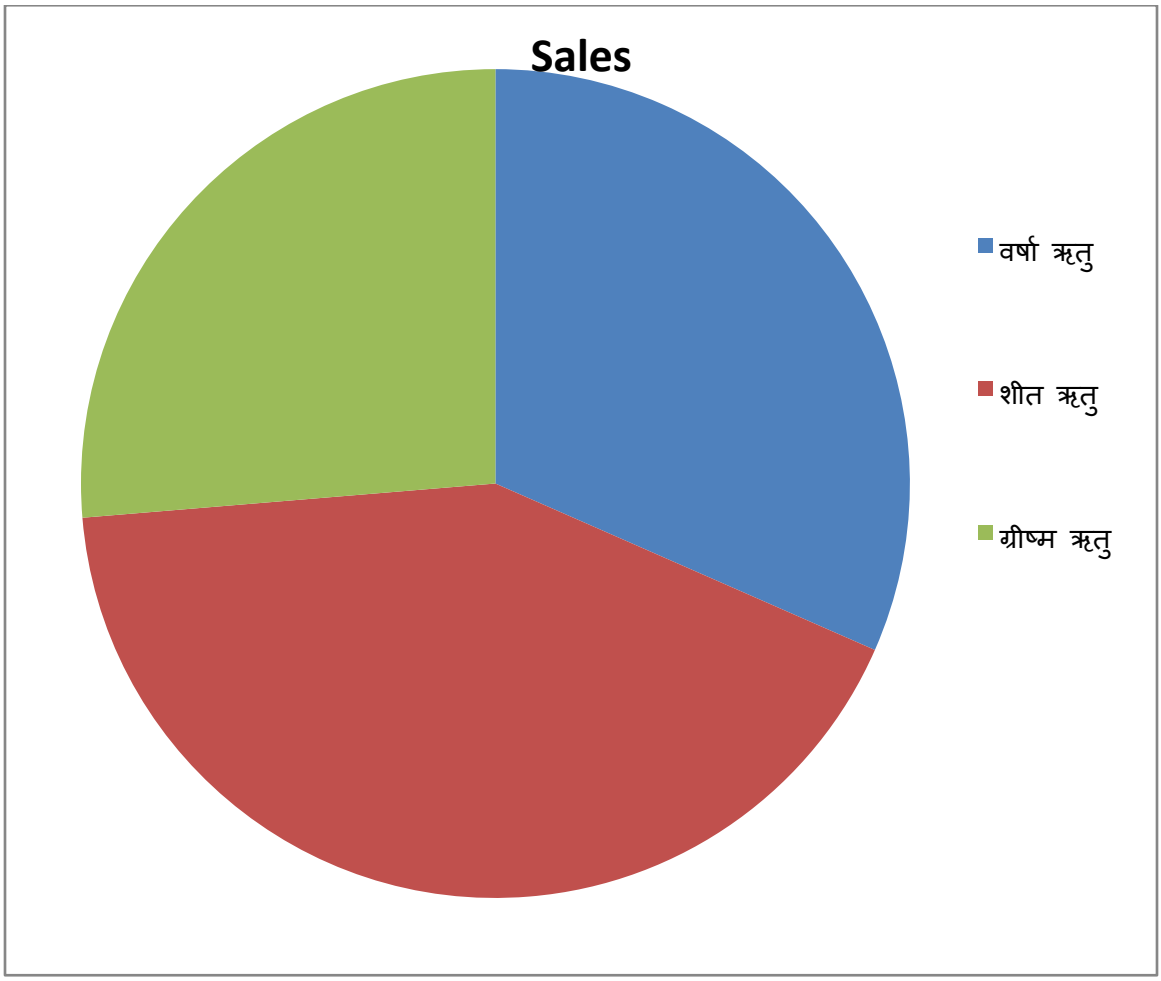

बच्चों की कम उपस्थिति वाले माह–

1. वर्षा ऋतु – जून–जुलाई में सत्र प्रारंभ के कारण ,सितम्बर माह में तीज पर्व के कारण ।
2. शीत ऋतु – अक्टूबर माह में धान कटाई के समय ।
3. ग्रीष्म ऋतु – मार्च अपैल में वार्षिक परीक्षा पूर्ण हो जाने के कारण बच्चों की उपस्थिति कम हो जाती है।

गांव की सामान्य समस्याएं –

1. प्रायः सभी गांवो की सबसे बड़ी समस्या के रूप में जुआ खेलने की समस्या सामने आई है। बड़ो के साथ साथ बच्चों को भी जुआ खेलते पाया गया । गांव के चौक चौराहो में झुण्ड में जुआ खेलते मिल ही जायेंगे।

2. कण्डरका , बोरसी ,हरदी एवं भालेसर में मद्यपान करने वालों की संख्या सबसे ज्यादा पायी गई है।

3. सभी गांवो में धर के पानी निकासी क लिए नाली नहीं है पूरा पानी सड़क के बीचों बीच बहता रहता है और सड़क को खराब कर रहा है।

4. प्रायः सभी ग्रामों मे संपूर्ण स्वच्छता अभियान के अंतर्गत शौचालय तो बना है लेकिन उसका इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। ग्राम देवादा में यह समस्या सबसे ज्यादा देखी गई है।

5. कण्डरका , बोरसी ,हरदी, भालेसर एवं गुधेली में डिस्पोजल, पानी पाउच का व अन्य पालीथीन का कचड़ा सबसे ज्यादा दिखाई दिया। फैक्ट्री में कार्य करके आने वाले मजदूर गांव के पहले खाली जगहों शराब पी कर गंदगी फैलाते हैं।

ग्राम हरदी का खतरनाक प्लास्टिक कचड़ा–

सफाई करते हुए निरीक्षण दल के सदस्य, सर्वे दल एवं छात्र–छात्राएं।

जनपहल

जनपहल में किए गए कार्य एवं उपलब्धियां:–

1. सभी दल प्रातः 5:30 को प्रभात फेरी निकालते थे, जिसमे विभिन्न प्रेरणादायी गीतों व नारों के द्वारा लोगो को शिक्षा एवं स्वच्छता हेतु जागरूक और कचड़े का उचित प्रबंध करने का संदेश देते थे।

ग्राम अकोली में प्रभात फेरी के साथ सर्वे दल एवं छात्र–छात्राएं

2. शाम को अंगना बैठक में महिलाओं के साथ चर्चा किया गया जिसमें मुख्य समस्या के रूप में शराब नशापान एवं जुआ की समस्या की समस्या आई।

3. शासकीय उ. माध्य. शाला कण्डरका के प्राचार्य श्रीमती निधी तिवारी के जन्म दिवस में वृक्षारोपण करते हुए निरीक्षण दल एवं सर्वे दल के सदस्य।

4. सर्वे दल एवं निरीक्षण टीम का गोंड़गिरी आगमन ।

भिंभौरी के मशाल रैली में श्री बोदले सर जी एवं मिश्रा सर जी।

निरीक्षण दल द्वारा ग्राम खुड़मुड़ा मे जानकारियां लेते हुए ।

गोंड़गिरी में मशाल रैली–

गोड़गिरी के मशाल रैली मे शामिल हुए शास. शिक्षक शिक्षा

महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीमती जे. एक्का मेम, श्री यू. के. चकवर्ती ,श्री आलोक शर्मा ,श्री शांतनु विश्वास ,श्रीमती लता मिश्रा, श्री सुनील मिश्रा,श्रीमती वाय. महाड़िक, निरीक्षण दल एवं सर्वे दल के सदस्य । मशाल रैली एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगो में शिक्षा के महत्व, बालिका शिक्षा ,सामुदायिक सहभागिता एवं स्वच्छता का संदेश जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

नेवनारा में सफाई करते हुए सर्वे दल के सदस्य गण–

नेवनारा में निरीक्षण दल–

गुधेली में निरीक्षण दल–

कण्डरका का हर्बल गार्डन का अवलोकन करते हुए–

—

जनपहल

हरदी में ग्राम सभा का आयोजन–

जनपहल

बड़ी ग्राम सभा सिलघट

जनपहल

सर्वे कार्य सिलघट

देवादा में बड़ी ग्राम सभा का आयोजन

ग्राम पिरदा में जन समुदाय को संबोधित करती हुई आदरणीया प्राचार्य मैम

शास. उ. मा. वि. कण्डरका में कक्षा बारहवीं का अध्यापन कराते हुए निरीक्षण दल के सदस्य रेवा राम साह्।

सर्वे ग्राम से वापसी

सर्वे से वापस महाविद्यालय आने पर एम. एड. फाइनल के छात्राध्यपकों द्वारा स्वागत करते हुए

WELCOME TO CTE RAIPUR

जनपहल